राष्ट्रीय लोक दल (RLD) और मुसलमान: एक ऐतिहासिक और सियासी तज़्ज़िया

लेखक/विचारक: डॉ सैयद नासिर शाह

राष्ट्रीय लोक दल (RLD) की सियासत हमेशा से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों और खेतिहर समाज के आस-पास घूमती रही है। चौधरी चरण सिंह की सियासी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए उनके बेटे चौधरी अजित सिंह ने 1996 में RLD की बुनियाद रखी थी। पार्टी के बनने से लेकर आज तक, जाट और मुसलमान इस पार्टी के दो सबसे अहम सुतून (स्तंभ) रहे हैं।

नीचे इस बात का मेरी सोच के मुताबिक तफ्सीली तज़्ज़िया है कि RLD का मुसलमानों के साथ कैसा रिश्ता रहा है, क्या खामियाँ रहीं, और आज के सियासी हालात क्या हैं।

RLD ने मुसलमानों के लिए क्या अच्छा किया?

पार्टी के इब्तेदाई (शुरुआती) दौर से लेकर पिछले कुछ सालों तक, RLD और मुसलमानों का साथ काफी मज़बूत रहा है:

* **सियासी हिस्सेदारी:** RLD ने हमेशा पश्चिमी UP में मुसलमानों को टिकट दिए और उन्हें विधानसभा और लोकसभा तक पहुँचने का मौका दिया। पार्टी के अहम ओहदों पर भी मुसलमान नेताओं को जगह दी गई।

* **किसान एकता:** RLD ने जाट और मुसलमान को मज़हब के चश्मे से देखने के बजाय 'किसान' के रूप में एकजुट किया। गन्ने के भाव और खेती के मसलों पर हिंदू-मुस्लिम किसान एक मंच पर आए, जिसने सांप्रदायिक राजनीति को लंबे अरसे तक पश्चिमी UP में रोके रखा।

* **चौधरी चरण सिंह की विरासत:** भाईचारे का जो फॉर्मूला (MAJGAR) चौधरी चरण सिंह ने बनाया था, RLD ने उस पर चलते हुए सामाजिक भाईचारा कायम रखने की कोशिश की।

RLD से कहाँ चूक हुई (क्या बुरा किया)?

जहाँ RLD ने सामाजिक एकता की बात की, वहीं कुछ ऐसे वाकयात और फैसले हुए जिन्होंने इस रिश्ते को नुकसान पहुँचाया:

* **2013 मुज़फ्फरनगर फसाद:** 2013 के दंगों ने जाट-मुस्लिम भाईचारे की कमर तोड़ दी। हालाँकि RLD दंगों में शामिल नहीं थी, लेकिन मुसलमानों का मानना था कि पार्टी इन दंगों को रोकने और बाद में खाई को भरने में उतनी असरदार साबित नहीं हुई जितनी उन्हें उम्मीद थी। इस दंगे ने सामाजिक ताने-बाने को बुरा नुकसान पहुँचाया।

* **सियासी फैसलों में अस्थिरता:** RLD के बार-बार गठबंधन बदलने से (कभी कांग्रेस, कभी SP, कभी BJP) वोटर कन्फ्यूज़ हुए और कई बार मुसलमानों को लगा कि उनके वोट का सही इस्तेमाल नहीं हो रहा है।

मुसलमान आज RLD से क्यों नाराज़ हैं?

आज के वक्त में RLD से मुसलमानों की नाराज़गी की सबसे बड़ी वजह हाल ही के सियासी फैसले हैं:

* **NDA (BJP) के साथ गठबंधन:** 2022 के UP विधानसभा चुनावों में मुसलमानों ने समाजवादी पार्टी (SP) और RLD के गठबंधन को अपना एकतरफा वोट दिया था ताकि BJP को हराया जा सके। लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले चौधरी जयंत सिंह का INDIA ब्लॉक छोड़कर BJP (NDA) के साथ चले जाना मुसलमानों को अपने वोट और भरोसे के साथ धोखा लगा।

* **खामोशी का गिला:** मुसलमानों को लगता है कि NDA में शामिल होने के बाद RLD अल्पसंख्यकों के मसलों पर, मॉब लिंचिंग, और हेट स्पीच जैसे मुद्दों पर वैसे खुलकर नहीं बोल रही है जैसे वह विपक्ष में रहकर बोलती थी।

मुसलमानों को RLD के साथ क्यों जुड़ना चाहिए?

बावजूद इन सब इख्तेलाफात (मतभेदों) के, सियासी माहिरों का मानना है कि मुसलमानों को RLD से पूरी तरह अलग नहीं होना चाहिए:

* **पश्चिमी UP की ज़मीनी हकीकत:** पश्चिमी UP में मुसलमान और जाट एक दूसरे के पड़ोसी हैं और इनकी मय्यशत (अर्थव्यवस्था) खेती और ज़मीन से जुड़ी है। ज़मीनी सतह पर अमन और तरक्की के लिए इन दोनों कौमों का साथ आना ज़रूरी है।

* **सियासी तन्हाई से बचाव:** अगर मुसलमान सिर्फ एक या दो पार्टियों तक महदूद हो जाएँगे, तो उनकी सियासी अहमियत कम हो जाएगी। क्षेत्रीय पार्टियों जैसे RLD के अंदर अपनी जगह बनाए रखने से नुमाइंदगी के रास्ते खुले रहते हैं।

* **जयंत चौधरी की सेक्युलर सोच:** RLD भले ही NDA का हिस्सा हो, लेकिन चौधरी जयंत सिंह का अपना मिज़ाज और भाषण अक्सर सेक्युलर और पढ़े-लिखे समाज की तरफ इशारा करते हैं। वो सांप्रदायिक राजनीति से बचते हैं।

✉️ चौधरी जयंत सिंह के नाम एक खुला खत

मोहतरम चौधरी जयंत सिंह जी,

राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय लोक दल।

आदाब।

एक ऐसे वक्त में जब हिंदुस्तान की सियासत तेज़ी से बदल रही है, पश्चिमी UP का मुसलमान आपकी तरफ बहुत उम्मीद और थोड़ी फिक्र के साथ देख रहा है। आप उस महान परंपरा के वारिस हैं जो चौधरी चरण सिंह जी ने शुरू की थी—जहाँ किसान की कोई जात नहीं होती थी, और हल चलाने वाले हर हाथ का दर्द एक जैसा होता था।

चौधरी साहब, पिछले कुछ वक्त के आपके सियासी फैसलों, खासकर NDA के साथ जाने से, मुसलमान समाज में एक अजीब सी बेचैनी और दूरी पैदा हुई है। जिस समाज ने 2022 में अपना पूरा भरोसा आपके और आपके निशान 'हैंडपंप' पर जताया था, आज वह खुद को सियासी तौर पर अकेला महसूस कर रहा है।

लेकिन आज हम गिले-शिकवे के लिए नहीं, बल्कि मुस्तकबिल (भविष्य) की बात करने आए हैं। आज मुसलमान को किसी "वोट बैंक" की तरह नहीं, बल्कि इस देश के एक बराबर के नागरिक की तरह देखने की ज़रूरत है। आज मुसलमानों को जिन चीज़ों की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वो ये हैं:

* **आला तालीम और रोज़गार:** मुसलमान आज जज़्बाती मुद्दों से ज़्यादा तालीम और रोज़गार चाहता है। हम चाहते हैं कि आप अपने असर-ओ-रसूख का इस्तेमाल करके पश्चिमी UP में ऐसी पॉलिसी बनवाएँ जिससे अल्पसंख्यक समाज के बच्चों को आला तालीम, स्किल डेवलपमेंट और रोज़गार के नए मौके मिलें।

* **खौफ से आज़ादी और हिफाज़त:** समाज में लगातार बढ़ रही नफरत, हेट स्पीच और भेदभाव ने एक डर का माहौल बनाया है। आप चाहे किसी भी गठबंधन में हों, आपसे ये उम्मीद है कि जब भी किसी कमज़ोर या अकलियत (अल्पसंख्यक) पर ज़ुल्म हो, आपकी आवाज़ सबसे पहले और सबसे बुलंद होनी चाहिए। आपका एक सेक्युलर स्टैंड मुसलमानों के अंदर तहफ्फुज़ (सुरक्षा) का एहसास पैदा करेगा।

* **सियासी हिस्सेदारी:** हमें सिर्फ किसान और मज़दूर के रूप में नहीं, बल्कि सियासी हिस्सेदार के रूप में भी अपना मुकाम चाहिए। पंचायत से लेकर संसद तक, आपसे उम्मीद है कि आप RLD में मुसलमान कार्यकर्ताओं और नेताओं को आगे बढ़ाएँगे, ताकि उनकी आवाज़ सदनों में गूँज सके।

* **भाईचारा अभियान:** 2013 के दंगों के बाद आपने और चौधरी अजित सिंह जी ने 'भाईचारा ज़िंदाबाद' की जो मुहिम शुरू की थी, उसकी आज सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। हिंदू-मुस्लिम, जाट-मुस्लिम एकता सिर्फ चुनाव तक महदूद नहीं रहनी चाहिए, ये गाँव-गाँव की चौपाल का हिस्सा बननी चाहिए।

जयंत जी, मुसलमान आज भी आप में एक पढ़ा-लिखा, सुलझा हुआ और किसानों का हकीकी नेता देखता है। अगर आप अपने गठबंधन की मजबूरियों से ऊपर उठकर, इन बुनियादी ज़रूरतों पर मुसलमान का साथ देंगे, तो ये सिर्फ RLD की नहीं, बल्कि इस देश के लोकतंत्र की बहुत बड़ी जीत होगी। हमें उम्मीद है कि आप अपने दादा और वालिद की तरह, सबको साथ लेकर चलने की रीत को आगे बढ़ाएँगे।

फकत,

एक फिक्रमंद हिंदुस्तानी।